# तृतीय अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' का

शिल्प–वैधानिक अध्ययन

# तृतीय अध्याय

## अभिमन्यु अनत के उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' का शिल्पवैधानिक अध्ययन

### प्रास्ताविक :

जैसे अन्य विधाओं के तत्व होते हैं वैसे ही उपन्यास के भी कुछ तत्व है। उपन्यास जीवन का प्रतिरूप है । किसी उपन्यास में घटना–व्यापारों की बहुलता होती है, तो किसी में व्यक्तियों के स्वभाव चित्रण की । उपन्यास का बाह्य ढ़ाँचा कथा व्दारा निर्मित होता हैं । उस ढ़ाँचे को पात्र गतिशील बनाते है । पात्रों का पारस्पारिक वार्तालाप हमें घटनाओं, पात्रों के स्वभाव और विचारों से परिचित कराता है । पाठकों का मन रमाने के लिए लेखक एक विशेष प्रकार की शैली का प्रयोग करते है । सभी घटनाएँ किसी न किसी समय या किसी विशिष्ट परिस्थितियों में घटित होती है , इसी स्थान , समय , परिस्थिति के समूच्चय को देश, काल और वातावरण कहते है । उपन्यास में व्यक्त विचार ' उद्देश्य ' होता है ।

अतः स्पष्ट है कि उपन्यास का निर्माण उपर्युक्त तत्वों के आधार पर होता है । इन्हीं तत्वों को हम प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में देख सकते है । अतः इसका विवेचन प्रस्तुत है ।

### ( 1 ) कथावस्तु :–

कथावस्तु : स्वरूप :——

कथानक उपन्यास का मूल तत्व है । इसका महत्व अन्य तत्वों की तुलना में अधिक है । कथानक ही वह वस्तु होती है , जिस पर उपन्यास का भवन खड़ा होता है । कथानक का अर्थ सिर्फ घटनाओं का समूह नहीं बल्कि घटनाओं में पारस्पारिक संबंद्धता होनी चाहिए ।

प्रस्तुत उपन्यास में एक के बाद दूसरी घटना का वर्णन है । पाठक को स्वंय एक घटना का दूसरी घटना से क्या संबंध है? यह जानाना पड़ता है। वह स्वंय उपन्यास के कथानक के आधार पर घटनाओं की क्रमबद्धत श्रृश्वला बनाता है ।

( अ ) 'हड़ताल कल होगी' का कथानक :—

प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस के ड़ेढ़ सौ वर्षों से पीड़ित,शोषित खेतिहर मजदुरों को न्याय दिलाने के लिए कथा का ताना–बाना बुना हैं। उपन्यास का नायक अमित और नायिका जानीन है । अमित भावुक,चिंतक और मजदूर नेता है । वह प्यार, कर्तव्य, संघर्ष के बीच जी रहा है । नायक अमित मध्यवर्गीय परवार से है । अमित का संघर्ष यह दोहरा संघर्ष है । एक ओर अमित ईख कांटनेवाले मजदुरों को न्याय दिलाना चाहता है तो वही दूसरी ओर प्रेमिका जानीन से ब्याह कर वर्ण भेद को मिटाना चाहता है । अमित मजदुरों को न्याय दिलाने के लिए हड़ताल करने का निश्चय करता है । परन्तु चीनी उद्योग के मिल–मालिक अमित को अपने रास्ते से हटा देते हैं । अमित को बुरी तरह जख्मी कर दिया जाता है । वह जब ऑखें खोलता है तो वह स्वंय को अपने कमरे में पाता है । तभी उसे अपने जीवन की संघर्षमय कहानी याद आती है। उसकी ऑखेां के सामने एक के बाद एक दृश्य आते–जाते रहते हैं । ये दृश्य ,मजदुरों के लिए किये संघर्ष के है, उन पर हुए अन्याय–अत्याचार के है, अपने प्रेम एवं अपने मित्र के जीवन की त्रासदी के है । अभिमन्यु अनत नायक अमित के भुतकाल को सुनाते है , साथ ही वर्तमान संघर्ष को भी ।

उपन्यास का नायक विद्रोही स्वभाव का भी है । वह मानव–मानव के बीच की हर खाई को पाटना चाहता है । फिर वह खाई सामाजिक विषमता की हो या आर्थिक विषमता की।

उसके पिता उसे एक अच्छी नौकरी दिलाते है। मगर अमित उसका स्वीकार नहीं करता । वह उस ढ़ंग का काम करना चाहता है,जहॉं आत्मा को गिरवी न रखना पड़े । अतः वह ईख काटनेवाले मजदुरों का नेता बनता है । उनके हक अधिकार के लिए संघर्ष करता है। क्योंकि सिर्फ चीनी उद्योग क्षेत्र के ही मजदुरों को मँहगाई भत्ता नहीं मिला है ओर ना ही तनख्वाह में बढ़ौती । अतः अमित गॉंव के सभी मजदुरों को संघटित करता है। वह मिल–मालिकों को

सोचने के लिए वक्त देता है, लेकिन कुछ उत्तर न मिलने की वजह से मजदूर चूप नहीं बैठते। आखिर हड़ताल करना तय होता है।

दूसरी ओर अमित जानीन नामक फ्राँसीसी गोरी लड़की से प्रेम करता है। किन्तु जानीन का गोरा समाज अमित जैसे श्वेत–वर्ण के लड़के के प्रेम का स्वीकार नहीं करता । अमित इस रंग–भेद को मिटाना चाहता है । जानीन अमित से बेहद प्रेम करती है परन्तु उसके घरवाले उसे अमित से मिलने पर पाबन्दी लगाते हैं। उसके सर के सभी बाल काट दीये जाते है । फिर भी जानीन अमित से मिलकर उसे अपने बाप की साजिश के बारे में बताती है। अमित को वह अपने बाप से दूर रहने के लिए कहती है। जानीन की तरह अमित पर भी अन्याय–अत्याचार किये जाते है । अमित को जानीन के बाप के गुण्डे अगवाह करते है और उसे जानीन से दूर रहने की सलाह दी जाती है। पर दोनों का आपस में जो प्रेम है वह कम नहीं होता । अतः वे दोनों अपने तरिके से इस अन्याय का विरोध करते है और अपने संघर्ष को सार्थक बनाने का प्रयत्न करते हैं ।

अमित मिल–मालिकों से बार–बार मिलता है ताकि दोनों में सुलह हो जाए । किन्तु मिल–मालिकों का एक ही जवाब प्राप्त होता है और वह है कि 'अभी मामले पर विचार किया जा रहा है' । अंत में अमित हड़ताल की तारीख एवं उस दिन क्या–क्या करना है आदि की योजनाएँ बनाता है । प्रत्येक गाँव के लिए एक–एक प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता है । पर मिल–मालिक यह नहीं चाहते है कि मजदुरों की हड़ताल सफल हो, इसलिए वे अपने गुण्डों के व्दारा गाँव में आग लगाते है और इसी में मजदुरों की झोपड़ियाँ जल जाती है । कुछ मजदूर भयभीत हो जाते है मगर अमित उन्हें हौसला, प्रेरणा देता है। वह मजदुरों से कहता है, 'अगर यह हड़ताल सफल नहीं हुई तो कल उनकी औलादो का हक मारा जायेगा । यह लड़ाई मजदुरों के बच्चों की लड़ाई है'।

आखिर हड़ताल का दिन नजदीक आता है। तभी तय किया जाता है कि कल हड़ताल के दिन सभी मजदूर ईंख के खेतों पर जाकर सिर्फ तीन ईंख काटकर वही बैठे रहेंगे ।

पर उसी रात जब अमित अपनी गाडी से गाँव के प्रतिनिधियों को छोड़कर काटेज गाँव से आगे अपने घर जाने निकलता है तो बीच सड़क में ही उसकी गाड़ी पर तीन आदमी हमला करते है, उसे बूरी तरह जख्मी किया जाता है । अमित ' हड़ताल कल होगी ' . . . कल होगी ' कहते–कहते नीचे जमीन पर गिर जाता है ।

यहाँ अमित का संघर्ष खत्म नहीं हुवा बल्कि पुनः नये जोश से शुरू होगा । उसका संघर्ष आज भी जारी है और कल भी रहेगा । अभिमन्यु अनत प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस समाज की सभी विषमताओं एवं असमानताओं से मुक्ति की कामना रखते हैं । इसके लिए वे स्वंय प्रयत्नशील है ।

( ब ) प्रासंगिक एवं अंतर्कथाएँ : ——

उपन्यास में एक कथावस्तु प्रमुख होती है और शेष गौण तथा प्रासंगिक कथाएँ । ये गौण तथा प्रासंगिक कथाएँ प्रमुख कथा के विकास और उसकी पुष्टि के लिए होती है । प्रस्तुत उपन्यास में उपर्युक्त कथा प्रमुख कथा है साथ ही कुछ प्रासंगिक एवं अंतर्कथाएँ भी है जो प्रस्तुत है ।

जैसे अमित की माँ व्दारा मॉरिशस का इतिहास दोहराना । वह इतिहास यह है कि कभी गौरे फ्राँसीसी समाज की लड़की और श्वेतवर्णीय समाज का लड़का इनका ब्याह नहीं हो सकता । माँ व्दारा बार–बार इतिहास दोहराने के कारण पाठक यह जान जाते है कि अमित का वर्णभेद का संघर्ष कितना तीव्र और कठिन है। यह कथा भी प्रमुख कथा को विकसित होने में मदद करती है । किशोर, मिशेल की जीवन-कथा भी प्रासंगिक कथा में आती है। साथ ही तीसरी प्रासंगिक कथा है, मंत्री सत्येन्द्र जो अमित का मित्र है, उसके व्दारा अमित पर राजनीतिक दबाव डालना । मंत्री सत्येन्द्र अमित का मित्र होते हुए भी वह चीनी उद्योग के लोगों की, मिल–मालिकों की सहायता करता है, उनका पक्ष लेता है । सत्येन्द्र, अमित को हड़ताल बंद करने की धमकी भी देता है, अगाह भी करता है कि, हड़ताल रोक दो, नहीं तो पुलिस कमिश्नर व्दारा गिरफ्तार कर लिए जाओंगे । अतः यह प्रासंगिक कथा भी उपन्यास की प्रमुख कथा को प्रभावी बनाती है, उसे विकसित करती है । पात्र सत्येन्द्र व्दारा

हमें राजनीतिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार एवं कुट– नीति का पता चलता है, जो सामान्य जनता के लिए की जाती है ।

इसके साथ–साथ अमित के कॉलेज में अमित की 'ट्रेड़ युनियन' पर हुई बातचीत जो अमित के 'मजदूर नेता' के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाती है । इस बातचीत में अमित का इतना ही कहना है कि, 'ट्रेड़ युनियन' और राजनीति दोनों भिन्न है। राजनीति को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए । युनियन मजदुरों की अमानत होती हैं । साथ ही छात्रों के पूछने पर अमित हड़ताल के बारे मे बताता है कि, पहली हड़ताल ईसा से 309 वर्ष पूर्व रोम शहर में आरिसतोस नामक यूनानी संगीतज्ञ ने की थी। तो विश्व की सबसे लंबी हड़ताल 1961 मे समाप्त हुई, कुल 33 वर्ष बाद खत्म हुई । इससे हमे ज्ञात होता है कि अमित युनियन एवं हड़ताल को कितना महत्व देता है । अमित हड़ताल व्दारा मजदुरों को उनके हक–अधिकार दिलाना चाहता है ।

कुछ और भी प्रासंगिक कथाएँ है जो वर्ण–भेद की समस्या को अभिव्यक्त करती है । जैसे जानीन की दादी माँ का काले–वर्ण के समाज को गालियाँ देना, साथ ही जानीन के पिता की काले–वर्ण के लोगें के प्रति धृणा एवं अपनी ही प्रतिष्ठा की चिंता करना ।

अंतर्कथाएँ के अंतर्गत मंत्री सत्येन्द्र का आशा के प्रति आकर्षण, जो एक सिर्फ हवस एवं शारीरिक प्रेम है । आशा अमित की कॉलेज की दोस्त है। जो सुसंस्कृत है। वह सत्येन्द्र से दूर रहकर अपना घर बसा लेती है। साथ ही अमित, आशा, सत्येन्द्र की खुजराहो की यात्रा की यादे, अमित का भोजपुरी बोली के प्रति लगाव आदि अंतर्कथाएँ प्रस्तुत उपन्यास में आयी है।

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख कथा के साथ–साथ कुछ प्रासंगिक एवं अतर्कथाएँ आयी है, कुछ प्रमुख कथा को विकसित एवं प्रभावी बनाने में सहाय करती है तो कुछ गौण सिद्ध होती है । अमित के दोहरे संघर्ष के कारण अन्य प्रासंगिक कथाएँ मुख्य कथा से अपने–आप संपर्क स्थापित करती है ।

( क ) 'हड़ताल कल होगी 'उपन्यास के कथानक का विकास :-

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में मॉरिशस के डेढ़ सौ वर्षों से पीड़ित, शोषित एवं दमित खेतिहर मजदुरों को न्याय दिलाने के लिए कथा का ताना–बाना बुना हैं । उपन्यास में मुख्य रूप से मजदुरों की आर्थिक समस्या, वर्ण–भेद की समस्या और राजनीतिक भ्रष्टाचार की समस्या को चित्रित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास के कथानक का प्रारम्भ अमित की कार–दुर्घटना से हुआ है। इसी कारण अमित जख्मी हालत मे अपने कमरे में बैठा है । वह अपने कमरे में अपने गत–जीवन की विविध घटनाओं को याद करता हैं। प्रस्तुत उपन्यास के कथा के मध्य में अमित द्वारा किया गया दोहरा सघर्ष हैं । वह एक ओर मजदुरों के हक की लड़ाई लड़ता है, तो वही दूसरी ओर गोरी फ्राँसीसी जानीन को प्राप्त कर मॉरिशस समाज में व्याप्त वर्ण भेद को मिटाना चाहता हैं । उपन्यास के केन्द्र में मजदुरों का संघर्ष उन पर हुए अन्याय, वर्ण–भेद से पीड़ित मॉरिशस समाज है। यहाँ एक ओर मजदुरों की हड़ताल , उनकी बेबसी , दयनीयता हैं, तो वही दूसरी ओर उच्च वर्ग की पूँजीवादी , मुनाफखोरी प्रवृत्ति हैं। उच्यवर्ग अपनी मुनाफाखोरी प्रवृत्ति के कारण चीनी उद्योग के मजदुरों को उनके अधिकार देने के पक्ष में नहीं है । परिणाम स्वरूप मजदूर संघर्ष करते हैं । अमित मजदूर युनियन का लीड़र बनकर संघर्ष को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयत्न करता है । अमित समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतक विषमता को मिटाकर आम लोगों को न्याय दिलाना चाहता है । इस कार्य के लिए वह संषर्घ को अत्याधिक महत्व देता है। किन्तु पूँजीवादी , मजदूर नेता के संघर्ष को बीच में ही खत्म करने का प्रयत्न करते हैं । इतना होते हुए भी अमित अपना संघर्ष जारी रखता है। वह इसी संघर्ष के आधार पर प्रेमिका जानीन को प्राप्त करने की लड़ाई भी लड़ता है ताकि मॉरिशस–समाज में फ्राँसीसियों द्वारा निर्मित सामाजिक विषमता ( वर्ण–भेद की समस्या ) को जड़ से उखाड़ा जा सके । प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित मॉरिशस–समाज में व्याप्त काले–गोरे , धनी – निर्धन , शोषित–शोषक आदि के भेद मिटाना चाहता है । वह मजदुरों की वर्तमान हालत में सुधार लाना चाहता है । वह मॉरिशस की आजादी के बाद भी मॉरिशस समाज में व्याप्त सामाजिक विसंगतियों को मिटाने के लिए अपना संघर्ष जारी रखता है।

प्रस्तुत उपन्यास का अन्त अमित–जानीन के संघर्ष का अन्तिम पड़ाव है। क्योंकि एक ओर जानीन अपने पूँजीवादी फ्राँसीसी पिता की दुष्ट प्रवृत्तियों का विरोध कर अमित के संघर्ष को सही मानते हुए उसके संघर्ष से ही पूर्णतः एकरूप हो जाने का निश्चय करती है । दूसरी ओर अमित जब हड़ताल की पूरी तैयारी के बाद गाँव के प्रतिनिधियों को उनके घर छोड़कर अपने घर चलता है तो बीच में ही तीन आदमी उसकी कार को रोकते है और उसे बुरी तरह जख्मी करते हैं। अमित ' हड़ताल कल होगी ?,,, कल होगी ' स्वर में नीचे गिर पड़ता है । यही प्रस्तुत उपन्यास का अंतिम वाक्य है , जो उपन्यासकार के आशावाद को, वर्तमान यथार्थ को दिखाता है । कल से हड़ताल शुरू होनेवाली थी किन्तु हड़ताल के एक दिन पहले ही मजदूर नेता अमित को पूँजीवादी मिल–मालिकों द्वारा असमाजिक तत्वों से रास्ते से हटा दिया जाता है । यही प्रस्तुत उपन्यास के कथानक की चरमसीमा है। प्रस्तुत उपन्यास को चरमसीमा पर ही खत्म कर उपन्यासकार ने कलात्मकता का परिचय दिया है। उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास का अन्त एक संघर्ष,एक आशा , एक प्रतिक्षा , एक वैचारिक–बौध्दिक व्दन्व्द के रूप में किया है । उपन्यासकार ने ऐसा करके पाठकों को एक बेचैनी,एक वैचारिक व्दन्व्द में रखा हैं। वे पाठकों को तनाव में रखकर अपने द्वारा उठाये प्रश्नों पर सोचने पर मजबूर करते हैं । उनके अनुसार रचना की सार्थकता प्रश्न के निर्माण में है । उसके जवाब पाठकों को ढूँठने हैं ।

## (2) पात्र अथवा चरित्र–चित्रण :——

### ( 1 ) स्वरूप : ——

उपन्यास के मुख्य तत्वों में कथानक के पश्चात पात्र अथवा चरित्र–चित्रण को उसका महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। पात्र अथवा चरित्र–चित्रण के माध्यम से उपन्यासकार जीवन के विविध रूपों को उपस्थित करता है । डॉ. प्रतापनारायण टंड़न का कहना है कि ,"एक श्रेष्ठ उपन्यासकार यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि मानव–चरित्र की वे कौन–कौनसी विशेषताएँ है , जिनके आधार पर किसी मनुष्य की मनुष्यता को देखा परखा जा

सकता है ।"[1] अतः इस तत्व का भी महत्त्व उपन्यास में अपेक्षित दृष्टि से अधिक हो जाता है।

सामान्य रूप से चरित्र–चित्रण के अन्तर्गत उपन्यासकार पात्र की जाति, वर्ग या व्यक्ति का प्रतिनिधित्व, पात्र का आन्तारिक–बाह्य व्यक्तित्व की सामान्य और सूक्ष्म विशेषताएँ साथ ही उसकी आकृति, वेषभूषा, वार्तालाप की शैली, भाषा आदि पर मुख्य रूप से ध्यान देता है। उपन्यास के पात्र ही कथानक को आगे बढ़ाते है ।

( 2 ) चरित्र –चित्रण की प्रणालियाँ :——

'चरित्र–चित्रण की मुख्य रूप से तीन प्रणालियाँ है। जैसे वर्णनात्मक प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली और नाटकीय प्रणाली ।'[2] वर्णनात्मक प्रणाली के अंतर्गत उपन्यासकार अपने शब्दों में पात्रों की आकृति और वेश भूषा का वर्णन, उनकी तत्कालीन बाह्य–आंतरिक मनःस्थिति का चित्रण करता हैं। दूसरी विश्लेषात्मक प्रणाली में लेखक पात्रों के चित्रण में स्वंय अपनी ओर से कुछ लिखता है, जैसे पात्रों के चरित्र, आचार–विचार, व्यवहार आदि का वर्णन करता है। तीसरी नाटकीय प्रणाली के अंतर्गत उपन्यासकार पात्रों को उपन्यास के रंग–मंच पर लाकर स्वयं बीच में निकल जाता है और उन्हें अपनी क्रिया प्रतिक्रिया, कथोपकथनों आदि व्दारा धीरे–धीरे पाठकों पर खुलने देता है ।

( 3 ) 'हड़ताल कल होगी' में पात्र अथवा चरित्र–चित्रण :——

प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित है और नायिका जानीन है। गौण नारी पात्र के अंतर्गत अमित की माँ जानीन की माँ, राधिका, आशा और गौण पुरूष पात्रों में किशोर, सत्येन्द्र, मिशेल, सुरेन, लखन, अमित के पिता, जानीन के पिता, अपाया और जगजाल आदि आते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में अभिमन्यु अनत ने पात्रों के चरित्र चित्रण के अंतर्गत मुख्य तीन प्रणालियों का प्रयोग किया है । जैसे वर्णनात्मक प्रणाली,

---

1. डॉ. प्रतापनारायन टंडन – हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास –पृष्ठ 29 ।
2. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत - शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त - पृष्ठ 421 ।

विश्लेषणात्मक प्रणाली और नाटकीय प्रणाली । अतः प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों का चरित्र–चित्रण प्रस्तुत हैं ।

(1) मुख्य पात्र---

(अ) उपन्यास का नायक 'अमित'

प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित है। सारे कथानक का सुत्राधार अमित है । उसी के इर्द–गिर्द सारी कथा घूमती है । अमित विद्रोही, चिंतक, मजदूर नेत्र, भावुक प्रेमी है। वह मध्यवर्गीय परिवार से आया है । अमित मार्क्सवाद से प्रभावित है। उसका वर्गसंघर्ष पर अटल विश्वास है। वह अच्छा पढ़ा लिखा है।वह भारत से अर्थशास्त्र की डिग्री लेकर लौटा है। पहले वह मॉरिशस में ही एक कालेज में इकोनोमिक्स पढ़ाता था । पर अपने विद्रोही स्वभाव के कारण अपनी पहली नौकरी साथ ही पिता व्दारा प्राप्त दूसरी नौकरी से भी इस्तीफा दे देता है । इस संदर्भ में अमित का कहना है, "मेरे सामने काम करने के लिए तीस–चालीस साल है, ..... । इतने लम्बे समय के लिए मैं वह काम नहीं कर सकता जो मुझे पसंद नहीं, उसे करते रहने का मतलब होगा, अपनी आत्मा को गिरवी रखकर सॉसों को चलाना ।"[1]

अतः अमित मजदुरों का नेता बनना स्वीकार करता है। उसे गरीब ईख खेती के मजदुरों से हमदर्दी है । इसी कारण उन्हें उनके हक–अधिकार दिलाने में वह अपनी जान की पर्वा नहीं करता । वह निड़र, साहसी, दृढ़–निश्चयी, सिद्धान्तवादी है। उसे कई धमकियाँ मिलती है, उसे काली कोठी में बंद किया जाता है, फिर भी वह अपना संघर्ष जारी रखता है। क्योंकि, "युनियन की दुनिया में प्रवेश करने पहले ही उसने यह प्रण किया था कि यह संसार उसके लिए मात्र जीविका का नहीं होगा ।"[2]

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 11 ।

2 वहीं– पृष्ठ – 33 ।

अमित वर्ण–भेद का कट्टर विरोधी है। वह रंग–भेद को जड़ से उखाड़ना चाहता है । वह प्रेमी है।वह जानीन से प्रेम करता है । दोनों में वर्ण–भेद होते हुए भी अमित सामने आनेवाली सभी मुसीबतों का सामना करता है । अमित कला–प्रेमी है,अध्ययनशील है। वह किशोर की पेटिंग्स् की सराहना कर उसे प्रोत्साहन देता है। वह हमेंशा कुछ न कुछ पढ़ता रहता है । जैसे ' मजदूर और उनकी हस्ती ' , ' पूँजीपति और उसकी साजिशे ' । उसे भारतीय संगीत और भारतीय फिल्में पसंद है। आनंद शंकर का संगीत,रवि शंकर के रिकार्ड्स वह सुनता है । ' बंदिनी ' जैसी फिल्मों में वह रस रखता है ।

अमित अपनी बोली भोजपुरी से बेहद प्रेम करता है ,उसकी इज्जत करता है । मॉरिशस में जो लोग भारतीय होते हुए भी भोजपुरी की इज्जत नहीं करते तो वह तिलमिला उठता है । अमित कहता है,"उस समय मेरे भीतर कुछ खोलने लगता है, जब भोजपुरी अच्छी तरह जानने वाले नौ–जवान भी उसे न जानने का बहाना कर जाते हैं ।"[1]

अमित स्वार्थ की दूनिया से कोसो दूर है । वह अपना स्वार्थ न देखते हुए मजदुरों की भलाई के बारे में सोचता हैं । वह कहता है,"मैं उन्हें ( मजदुरों को ) लड़ाई से जोड़ना चाहता हूँ । ..... ऐसा करते हुए मेरा भविष्य अँधेरे में डूबकर रह जाये, इसकी मुझे परवाह नहीं ।"[2] अतः वह सामाजिकता को महत्व देता है ।

अमित के पास दृढ़ आत्मविश्वास है । उसे धारा के साथ बह जाना पसंत नहीं । वह धारा को ही नई दिशा दिलाना चाहता है । वह परिश्रमी है, इसी कारण 'चेक–आफ' पर मजदुरों की राय जानने के लिए सभी गाँवों का सर्वेक्षण करता है। वह राजनीति का तीव्र विरोध करता है,क्योंकि राजनीति जनता के पक्षें में न रहते हुए अमिरों के पक्ष में ही रहती हैं ।

अमित के पास अच्छा संगठन–कौशल्य एवं प्रभावी वाक्चातुर्य की कला हैं। इसी कारण सभी मजदूर संगठित होते हैं । वह मजदुरों को प्रेरणा देते हुँए कहता है,"हमारा उद्देश्य अपने अधिकारों की सुरक्षा है । इसके लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 18 ।

2 वही – पृष्ठ – 68 ।

13982
A

पूँजीपतियों की साजिश को अच्छी तरह समझ लें । ये लोग यही चाहते हैं कि हमारे लोग हमेशा ही वैसे रहें, जैसे कि पच्चीस वर्ष पहले थे ।"[1]

अमित ज्ञानी है, वह एक मजदूर नेता होने के नाते, हड़ताल के बारे में, उसके इतिहास के बारे में भली–भाँति जानता है । जैसे सबसे लंबी हड़जाल 33 वर्ष तक चली । सबसे बड़ी समूह हड़ताल 1926 में हुई थी । आदि बातें उसे ज्ञात हैं ।

अमित धार्मिक सहिष्णुता को अत्यधिक महत्व देता है । वह सभी धर्मो के प्रति आदरभाव रखता है । वह ईसाई लड़की जानीन से ब्याह कर उसे अपने ईसाई धर्म का पालन करने की छूट देने का फैसला करता है । उसका ठाम मत है कि, सभी को अपने धर्म से प्यार एवं उसकी इज्जत करने का हक है । वह अहिंसावादी , मानवतावादी भी है ।

अमित के पास अपार शक्ति है। इसी कारण उसने पूँजीपतियों के षड़यन्त्र का कई बार शिकार होते हुए भी लड़ना नहीं छोड़ा । वह वर्तमान असंतुष्ठ हालात में परिवर्तन लाके ही रहेगा ।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है,अमित साहसी, सिद्धान्तवादी, मानवतावादी, अहिंसावादी, दृढ़ आत्म–विश्वासु, कला–प्रेमी, भावुक प्रेमी, अपनी भाषा एवं संस्कृति का आदर करनेवाला, अन्य नवयुवकों को अपने हक के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देनेवाला प्रेरणा–स्त्रोत है। साथ ही अमित परोपकारी, संगठन कौशल्य से पूर्ण है ,वह मनुष्यता का धनी है,ईमानदार है ,सहृदयी है। वह न्याय और सत्य का पक्ष न छोड़नेवाला है । उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य मजदुरों को उनके हक देना और वर्ण–भेद जैसी सामाजिक विषमताओं को मिटाकर वर्गहीन समाज रचना तैयार करना है

अतः स्पष्ट है अमित उपन्यास का केन्द्र बिंदू है । वह आशावादी एवं अव्दितीय पात्र है । वह किसी भी भारतीय को ओदोलित करेनवाला प्रभावी पात्र है।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 86 ।

( ब ) उपन्यास की नायिका 'जानीन': ——

'हड़ताल कल होगी' की नायिका जानीन है। प्रस्तुत पात्र के चरित्र चित्रण में अभिमन्यु अनत ने वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक प्रणालियो का प्रयोग किया है । जानीन उच्चवर्गीय परिवार से आयी है । वह फ्राँसीसी उद्योगपति की इकलौती बेटी है । अभिमन्यु अनत जानीन के बारे कहते है, "गोरा चेहरा ... ललछंव बाल ........ नीली ऑखें , " , , एक स्थायी–सी गंभीर मुसकान।"[1] जानीन हमेंशा अत्यंत आकर्षक कपड़ों में रहती है। वह स्वभाव से उदार है । उसके मन में गरीब मजदुरों के लिए प्रेम, सहानुभूति है। एक पूँजीपति की बेटी होते हुए भी वह गरिबों का आदर करती है। जानीन ने हमेशा से ही ईश्व खेती के मजदुरों का साथ दिया है।

जानीन नायक अमित की प्रेमिका है । अमित के दोहरे–संघर्ष में जानीन सभी विरोधों को तोड़कर साथ देती है । वह अमित के संघर्ष को अपना संघर्ष मानती है । वह सभी समस्याओं का मुकाबला कर अमित से ब्याह रचाना चाहती है । वह अमित के आचार–विचार उसके संघर्ष से अत्यधिक प्रभावित है ।

जानीन के माध्यम से प्रस्तुत उपन्यास में वर्ण–भद की समस्या को गंभीरता से रखा है। जानीन मानवतावादी है। वह वर्ण–भेद की समस्या का विरोध करती है । अपने घर के सभी नौकरों को अपना मानती है , उनके साथ आदरतापूर्ण व्यवहार करती है ।

जानीन एक फ्राँसीसी लड़की है , फिर भी उसके दिल में भारतीय कला–संगीत, संस्कृति, फिल्में आदि के प्रति आदरभाव एवं प्रेम है । इसी प्रेम के कारण वह घर में विरोध होते हुए भी अपने टेलीविजन पर भारतीय फिल्में देखती है । भारतीय लोगों के त्यौहार, उनकी शादी में शामिल होती है। उसने अमित के साथ एक मजदूर की लड़की की शादी देखी है । वह कलाप्रिय नारी है । वह अमित की तरह रवि शंकर के रेकॉर्ड़ सुनती है । वह पेटिंग्स् में भी रूचि रखती है। जानीन अध्ययनशील है । वह दाली के उपन्यास साथ ही कमला मार्कण्डेय के उपन्यास भी पढ़ती है । वह गांधी संस्थान में आए भारतीय कलाकारों के संगीत का कार्यक्रम सुनने भी जाती है ।

---

1 अभिमन्यु अनत : हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 19 ।

जानीन शान–शौकत, ऐश्वर्य–आराम से दूर भागना चाहती है। वह सादगीपूर्ण जीवन जीना चाहती है । उसके घर का जो ऐश्वर्य है, उससे उसे कभी सुख नहीं मिला और न ही उसे अपने माँ–बाप का प्यार मिला हैं । उसने हमेशा अपने परिवारवालों से डाँट खायी है।

वह हमेशा सेही अपने माँ–बाप के प्रेम से वंचित रही है, क्योंकि उसके माँ–बाप सिर्फ अपनी शान–शौकत की ही पर्वा करते हैं ।

जानीन ' सामन्ती ' शब्द से भी दूर रहना चाहती है । वह अमित से कहती है, "जब भी तुम हैसियत की बात करते हुए मुझे सामन्ती बताने का प्रयत्न करते हो, मैं पीड़ा से अकुला जाती हूँ ।"[1]

जानीन निर्भयी एवं साहसी है । वह अपने प्रेम के लिए मॉरिशस के ड़ेढ़ सौ वर्ष के इतिहास को मिटाने के लिए अपनी लाश से भी गुजर ने के लिए तैयार है। वह अमित से कहती है, "विश्व–भर के इतिहास और साहित्य में जब प्यार ने किसी दिवार को अपने सामने टिकने नहीं दिया, तो फिर यह कैसा अपवाद है .... इस दीवार को नहीं फाँद नहीं सकी तो .....उसे अपनी लाश पर ढह जाने दुँगी ।"[2]

जानीन अत्यंत भावुक एवं संवेदनशील है। इसी कारण घर की एक पार्टी में जब बूढ़े नौकर के हाथ में काच लग जाता है, तो नौकर की पीड़ा उसके सभी धमनियों में होने लगती है । लेकिन जानीन के पिता बूढ़े नौकर पर जोर से बरस पड़ते हैं। तभी जानीन सोचती है, "आदमी को आदमी के हाथ इतना दण्डित होना पड़े ? ... और फिर यह रंग की प्रभुता क्या आज भी पुरानी नही हुई ? तो फिर कब होगी ? चाद पर बसेरा के बाद ? ।"[3]

जानीन पूँजीपतियों का तीव्र विरोध करती है । उसे उनकी सभी साजिशे मालूम है क्योंकि बड़े–बड़े जमींनदार, मिल–मालिक, उद्योगपति आदि सब उसके घर की पार्टियों में शामिल होते हैं । तभी जानीन को ज्ञात होता है कि ये पूँजीपति जानबूजकर ईख खेती के

---

1 अभिमन्यु अनत –हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 105।
2 वहीं – पृष्ठ – 119 ।
3 वहीं – पृष्ठ – 132 ।

मजदुरों के हक देने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि वे समझते है की कहीं मजदुरों का ही वर्ग उपर न आ जाए ।

अतः स्पष्ट है, जानीन एक आदर्श प्रेमिका है । वह सुस्वभावी , निर्भय, साहसी, मानवता–वादी, परोपकारी, भारतीय धर्म एवं कला संस्कृति पर प्रेम करनेवाली , मजदुरों के प्रति अपार सहानुभूति रखनेवाली अद्वितीय एवं प्रधान नारी पात्र है ।

( 2 ) <u>गौण पात्र</u> : ——

( अ ) <u>गौण नारी पात्र</u> : ——

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में गौण नारी पात्रों में अमित की माँ, जानीन की माँ एवं दादी , राधिका , चंपा , सिमोन, आशा , राबिया हैं ।

अमित की माँ एक पतिव्रता नारी है । उसने कभी अपने पति का विरोध नहीं किया । उसने हमेशा ही अमित को भली–भाँति समझा है । वह अमित को मॉरिशस का डेढ़ सौ वर्ष पुराना इतिहास बताकर सतर्क करती है । उसे अपनी जान की पर्वा करने के लिए कहती है ।

जानीन की माँ और दादी दोनों फ्रॉसीसी हैं । दोनों को अपनी मर्यादा, प्रतिष्ठा के सिवा कुछ अच्छा नहीं लगता । दोनों को भी काले वर्ण के लोगों से नफरत है। वे अपने धर्म, संस्कृति को छोड़कर अन्य धर्म–संस्कृतियों का विरोध करती हैं ।

राधिका, अमित के घर की नौकर है । वह अमित की देखभाल करती है । वह हमेशा भोजपुरी में बातें करती है । इसके माध्यम से अभिमन्यु अनत अपनी भाषाओं के प्रति प्रेम प्रकट करते है । चंपा यह जानीन के घर की नौकर है।

सिमोन यह जानीन की दोस्त है । उसकी वाणी और करणी में अंतर है । कहती तो है कि जाति से बड़ी चीज मानवता है , लेकिन करणी में काले–वर्ण के लोगों का विरोध करती हैं ।

आशा , अमित की अच्छी दोस्त है । उसने हमेशा अमित और जानीन के आपसी प्रेम का आदर किया है । आशा ही अमित को जानीन के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती है ।

( ब ) गौण पुरूष पात्र : ——

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में गौण पुरूष पात्रों के अंर्तगत किशोर, सत्येंन्द्र., मिशेल., सुरेन ,लखन ,अमित के पिता ,जानीन के पिता,गायेता.,जां–दे–मार्गो., अपाया,जगलाल आदि हैं । अतः उनकी जानकारी प्रस्तुत हैं।

किशार , अमित का अच्छा दोस्त था । दोनों एक साथ कालेज में पढ़ते थे । किशोर विद्रोही स्वभाव का था । यहाँ यह पात्र कमजोर नजर आता है , क्योंकि अमित की तरह वह अंत तक संषर्घ नहीं करता । किशोर वर्ण–भेद का शिकार है । उसकी कला को फ्राँसीसी सरकार मान्यता नहीं देती/ इसी कारण वह आत्महत्या कर लेता हैं । शुरू में किशोर संघर्ष जरूर करता है लेकिन उसका विद्रोह कोई समझ नहीं पाता । किशोर के धर उसके माँ –बाप है । पिता नौकरी से रिटायर्ड हो चुके है । उसके घर में उसकी दो बहने है, जिनका अभी ब्याह नहीं हुंवा । किशोर अपनी प्रगति करना चाहता है परन्तु फ्राँसीसी समाज उसे उठने नहीं देता ।

सत्येन्द्र, भ्रष्ट राजनेता का प्रतिक है । वह मुनाफाखोर है । अपने जिस गाँव से चुनाव जीतकर मन्त्री बना ,उसी गाँव की जनता पर वह अन्याय करता है । वह अमित के संघर्ष को शिथिल करना चाहता है। इसलिए वह मिल–मालिकों का पक्ष लेता हैं, उन्हें ही सहीं करार देता है। वह स्वार्थी , पदलोलुप हैं ।

मिशेल, अमित का अच्छा दोस्त है । शुरू में दोनों युवासंघ के सदस्य थे । मिशेल एक अच्छा कलाकार है । वह नाटकों में अभिनय करता है । युवा मंत्रालय की ओर से आयोजित नाट्य प्रति–योगिताओं में उसने तीन बार प्रथम अभिनेता का सम्मान प्राप्त किया है । लेकिन जब फ्राँस सरकार की ओर से छात्रवृत्ति प्राप्त होने की बात हुई तो मिशेल को अयोग्य करार दिया गया । क्योंकि वह फ्राँसीसी नहीं था ।

सुरेन , अमित के संघर्ष में मदद करता है । अमित जब जख्मी हालत में घर पर होता है, तो तभी वह दफ्तर का सारा काम सँभालता है ।उद्योगपतियों से पत्राचार , मीटिंग की फाइलें अमित तक पहुँचान्ना , ' चेक–ऑफ ' के लिए सर्वेक्षण करना आदि । सुरेन परिश्रमी है। वह अमित की भलाई चाहता है ।

लखन अमित का चचेरा भाई है । जो पढ़ा–लिखा है । अपने विद्रोही स्वभाव के कारण उसने अब कालेज की पढ़ाई छोड़ दी है । वह टॅक्सी चलाता है। वह बात–बात पर सर फौड़ने की बाते करता है। किसी भी सरकारी नौकरी में वह टिका नहीं है । वह टैक्सी चलाने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानता है । लखन अगर चाहता तो अमित पर हमला करने वालों को छोड़ता नहीं किन्तु अमित उसे रोक देता है ।

अमित के पिता स्वार्थी पुरूष है । वे मजदुरों की भलाई की अपेक्षा अपने भविष्य के बारे में ज्यादा सोचते है । वे धन एवं पदलोलुप हैं । वे अमित को संघर्ष की लड़ाई से हटाकर उसका अलग तरह का भविष्य बनाना चहते है ।

जानीन के पिता पूँजीपति का प्रतिनिधित्व करते है । वे एक फ्राँसीसी उद्योगपति है, जिन्होंने हमेशा जानीन–अमित के आपसी प्रेम का विरोध किया । साथ ही मजदुरों पर अन्याय किये । इनका बड़ा लड़का 'गायेता' है जो फ्रान्स में पढ़ता है । वह जानीन से बेहद प्रेम करता है। जा –दे–मार्गो वह फ्राँसीसी लड़का है, जिसके साथ जानीन की दादी जानीन का ब्याह करना चाहती है । अपाया और जगलाल, जानीन के घर के नौकर है । ये काले–वर्ण के होने के कारण जानीन के पिता का इनके साथ का व्यवहार अमानवीय है । सभी नौकर इनके गुलाम हैं।

अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में अभिमन्यु अनत ने मुख्य रूप से अमित और जानीन के चरित्र–चित्रण को विस्तार से स्पष्ट किया है । क्योंकि इन दोनों का संघर्ष ही मुख्य कथानक है । अन्य गौण पात्र कथानक को गति देते है, प्रधान पात्रों के चरित्र को प्रकाश में लाते है । अभिमन्यु अनत ने चरित्र–चित्रण में वर्णनात्मक और विश्लेषात्मक प्रणालियों का प्रयोग कर चरित्र–चित्रणको प्रभावी बनाया है ।

## (3) कथोपकथन

### (1) स्वरूपः ——

उपन्यास में लेखक कथा का सुत्रपात कर उसे पात्रों के हाथों में विकसित होने के लिए छोड़ देता है । पात्र यथावसर अपने वार्तालाप, स्वकथन अथवा कथोपकथन व्दारा उसे गति देते है । कथोपकथन का संबंध कथानक और पात्र दोनों से है ।

( 2 ) 'हड़ताल कल होगी' में कथोपकथन :——

प्रस्तुत उपन्यास के संवाद उद्देश्यपूर्ण है । ये संवाद प्रस्तुत उपन्यास के कथानक का विकास करते है, उसे गति देते है । साथ ही संवाद पात्रों के चरित्र–चित्रण में सहायक है और उपन्यास के उद्देश्य को भी स्पष्ट करते है । जैसे प्रस्तुत उध्दरण /संवाद कथा को गति देने में सहायता प्रदान करते है । उदाहरणार्थ — प्रस्तुत उपन्यास में सिमोन और जानीन के संवाद प्रस्तुत है -

सिमोन : –'तुम अपने परिवार के साथ–साथ हम सभी लोगों को नीचा दिखाकर रहोगी ।'

जानीन : –' मेरे परिवार के साथ यह ' हम लोगों का क्या मतलब है ?'

सिमोन : –' हमारी पूरी जाति का ।'[1]

उपर्युक्त संवाद व्दारा हमें ज्ञात होता है कि जानीन जरूर कुछ ऐसा कर जायेगी जिससे उसकी जाति का अपमान होगा । आगे वही होता है अमित–जानीन में वर्ण–भेद, जाति–भेद होते हुये भी वह अमित से मिलना नहीं छोड़ती । अतः स्पष्ट है प्रस्तुत उपन्यास के संवाद कथानक को गति देने का सफल कार्य करते हैं । प्रस्तुत उपन्यास में ऐसे भी कई संवाद है जो पात्रों का चरित्र–चित्रण करने में सक्षम है । जैसे — अमित और उसके पिता में हुई बहस उनकी चारित्रिक विशेषताएँ दर्शाती है ——

अमित के पिता : –' तुम स्ट्राइक करवाने जा रहे हो ?

अमित : –' कोई दूसरा चारा नहीं '।

पिताजी : –' स्ट्राइक इल्लीगल है " ।

अमित : –' स्ट्राइक इल्लीगल नहीं हो सकती " ।

पिताजी : –' जानते हो, किन लोगों से दुश्मनी मोल ले रहो हो ? "

अमित : –' जानता हूँ " ।

पिताजी : –' जानते हो फिर भी बेवकूफी कर रहे हो ?"

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ 40 ।

अमित : – ' साहस कर रहा हूँ " ।

पिताजी : – " मैं उसे बेवकूफी कहता हूँ " ।

अमित : – ' और मजदुरों के अधिकार को हड़पकर जब्त किये रहने को तुम क्या कहोगे पापा ? "

पिताजी : – ' तुम्हारे बाप – दादे का तो नहीं हड़पा गया ? "[1]

उपर्युक्त संवाद से ज्ञात होता है कि अमित साहसी, मानवतावादी है। इसी संवाद के व्दारा हम अभिमन्यु अनत के उद्देश्य को भी समझ सकते हैं । अमित और उसके पिता में हड़ताल को लेकर जो बहेस हुई है उससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत उपन्यास, 'हड़ताल कल होगी ' का मुख्य उद्देश्य एवं संघर्ष हड़ताल करना नहीं है बल्कि गरीब मजदुरों को न्याय दिलाना , उन्हें हक–अधिकार प्राप्त कराना हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के कुछ संवाद पात्रों की व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं । जैसे अभिमन्यु अनत किशोर के बारे में कहते है, "वह अपनी आत्मशांति या अपने को सुख पहुँचाकर खुश करने के लिए सृजन नहीं करता था, उसका अविष्कार दुसरों को कुछ दे सके, इस उद्देश्य से उसने तूलिका थामी थी रोटी कमाने के तो कई रास्ते होते हैं ।"[2]

अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास के संवाद उद्देश्यपूर्ण है । वे कथा का विकास करते है साथ ही पात्रों की व्याख्या एवं उसका चरित्र–चित्रण भी करते हैं । वे कही लम्बे है तो कही छोटे–छोटे एवं सटिक हैं । प्रस्तुत उपन्यास के सभी संवाद उपयुक्त हैं ।

## ( 4 ) देश , काल और वातावरण :——

### ( 1 ) स्वरूप :——

उपन्यास की कथावस्तु जिस परिवेश में घटित होती है उसका संबंध किसी न किसी स्थान से होता है और वह किसी समय विशेष अर्थात युग की देन होती है। स्थान और समय के अनुरूप कथा की पृष्ठभूमि का अंकन करना भी उपन्यासकार का कर्तव्य होता है ।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 155 ।

2 वहीं– पृष्ठ – 107 ।

यही कर्तव्य देश,काल और वातावरण में बँधा है। रचना में यह अनिवार्य बंधन है । कथा को वास्तविकता का आभास देने के लिए यह आवश्यक तत्व है ।

( 2 ) ' हड़ताल कल होगी ' का देश ,काल और वातावरण :——

प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस व्दीप का स्थानीय रंग , उसकी सामाजिक , सांस्कृतिक., राजकीय., आर्थिक. , भाषिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया हैं । व्दीप का 'स्थानीय ' या ' लोकर रंग ' के अंतर्गत स्थानीय बाह्य वातावरण और प्रकृति–चित्रण आता है। प्रस्तुत उपन्यास की पृष्ठभूमि मॉरिशस व्दीप है । इसके अतंर्गत उपन्यास में मॉरिशस के गॉव–शहर , गली–मोड़,साथ ही कही–कही प्रकृति का चित्रण भी हैं । मॉरिशस एक सुंदर व्दीप है । वहाँ ईंख की खेती सबसे ज्यादा होती हैं । साथ ही वहाँ मछलियों का व्यापार भी बड़ी तादाद में चलता हैं । खाने में इसकी प्रमुखता रहती है । लेकिन अच्छी मछलियों पर पहले पर्यटकों का अधिकार होता है,बाद में वह स्थानीय लोगों को ज्यादा दाम में प्राप्त होती हैं।

मॉरिशस में आप्रवासी भारतियों की संख्या सबसे ज्यादा हैं । इन्होंने ही व्दीप को फ्राँसीसियों से और अंग्रजों के अत्याचार से मुक्त किया हैं और अपनी संस्कृति की रक्षा की हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस के कई स्थानों की भव्यता का वर्णन है। जैसे तोपिकाना की भव्यता, क्यूर्पिप का शहरी इलाका,जहाँ जानीन जैसे फ्राँसीसी परिवार रहते हैं । यह विशेष लोगों का ही शहर है, यह बेहद खुबसूरत है । अमित का ऑफिस और घर दोनों भीड़वाले इलाके में हैं। उसका ऑफिस पोर्टलुई के भीड़ वाले इलाके में है । पोर्टलुई का पश्चिम भाग हमेशा से ही बंदरगाह के कारण जहाजों से भरा रहता है । ऑफिस का बाहर का इलाका दुकानदार., ग्राहक. , मजदूर. , विद्यार्थी., भिखारी., क्लर्क , अफसर,पादरी., वेश्या., राजनेता., चोर. , रोगी.,डॉक्टर , शराबी , चीनी , मुसलमान , क्रिओल , गोरा , हिन्दू , नौकरी की तलाश में निकला वही झुका, कमरवाला युवा अदि से भरा हुँवा हैं । दफ्तर से अमित का घर आठ मील कें फासले पर है। रोजहिल से होते हुए अमित का घर आता है। रोजहिल ऐसी जगह है जहाँ मांस–मछलियों का व्यापार होता हैं । रोजहील का आगे का इलाका पाश्चात्य संस्कृति प्रभाव से पूर्ण है । वहाँ डिस्को क्लब है , वहाँ का वातावरण पॉप संगीत के कोलाहल से पूर्ण हैं । कुछ ही दूरी पर गिरजाघर है,मूसलमानों की मस्जिद के लाऊडस्पीकर

से आती अजान भी हैं । यहाँ हर धर्म के लोग हैं । इस उपन्यास में आये काटेज और सवाना गाँव मजदुरों के है । त्रु–ओ–बोश की सैलानियों की बस्तियों का भी उल्लेख हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रकृति–चित्रण प्रभावी रूप से उभरकर नहीं आया है । यह चित्रण वहीं है जहाँ समुद्र किनारे अमित–जानीन की मुलाकातें होती है । जानीन का एक बंगला समुद्र तट पर भी है । यहाँ भी दोनों आते है । यहाँ के समुद्र तट का वर्णन इस प्रकार है ;"सागर की हिलती डोलती तरंगों के तुकडों पर सूरज की किरणे कॉच की तरह चमक रही थी । समुद्र का रंग विविधता लिए हुए था । नीलापन कही गहरा था । कही हलका । कहीं हरापन था कोमल पत्तों –का रंग लिए हुए तो कहीं सफेदी..... । मूँगों और चट्टनों की लंबी–सीथी कतार से टकराती हुई बड़ी–बड़ी लहरे थी ।"[1]

प्रस्तुत उपन्यास में समाज के तीन वर्ग हैं। उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग । उच्चवर्ग पूँजीपति फ्रॉसीसी मिल–मालिकों का हैं,तो निम्न–वर्ग लाचार मजदुरों का हैं। वहीं मध्यवर्ग अपना अस्तित्व खोजता नजर आता है । उच्च वर्ग के हाथ में सबकी खुशियाँ केद हैं। उच्चवर्ग क्यूर्पिप के सुंदर इलाके में रहता है,तो निम्नवर्ग गंदी बस्तियों में।अतः यहाँ सामाजिक विषमता नजर आती है । व्दीप पर विविध धर्मो के लोग रहते हैं । जैसे — हिंदू, मुसलमान, ईसाई आदि । वहाँ चीनी समुदाय एवं क्रियोंली समाज भी हैं । सबकी अलग–अलग भाषा एवं संस्कृतियाँ है । हिंदू मंदिरों में जाते है, ईसाई गिरजाधर में । चीनी समुदाय अपनी भाषा को कभी नहीं छोड़ता । अपनी सभी दुकानों पर उन्होंने चीनी में ही नाम लिखें हैं । उपन्यास में एक हिंदू मजदूर परिवार की लड़की के ब्याह का वर्णन है, जिसे अमित और जानीन देखने जाते है । वह प्रस्तुत है ;"पंड़ाल तोरणों से सजा हुआ । ... ।, , व्दार पूजा , , , , दूल्हे की आरती , , , महिलाओं का मंगलाचरण , , , , पंडित के श्लोक , , , , इमली घोटाई , , , , कन्यादान , , लवा मिलाना , , , , अग्नि की परिक्रमा , , , , मॉग का सिंदूर , , , , कोहबर की खीर , , , , विदाई , , , ,।"[2]

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी –पृष्ठ–139 ।

2 वहीं – पृष्ठ– 73 ।

प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस की राजकीय और आर्थिक स्थिति, भाषिक स्थिति को भी देखा जा सकता हैं । व्दीप की राजकीय एवं आर्थिक स्थिति अस्थिर है । प्रस्तुत उपन्यास में दिखाया गया है कि मन्त्रियों ने कभी गरीब मजदुरों का साथ नहीं दिया, बल्कि उच्चवर्ग का, शोषकों का पक्ष लिया हैं । व्दीप की आर्थिक स्थिति एवं व्यवस्था मुख्यतः चीनी ( शर्करा ) पर अवलम्बित है । किन्तु ईख की खेती करनेवाला मजदूर निरंतर पूँजीपतियों के षड़यन्त्र का शिकार हुआ है। मॉरिशस की अर्थ व्यवस्था पर गोरे फ्राँसीसी का आधिपत्य हैं। भले ही सरकार की ओर से कल्याणकारी योजनाएँ जारी की जाती है परन्तु वे कभी मजदूर तक नहीं पहुँचती ।

प्रस्तुत उपन्यास में जहाँ तक मॉरिशस में प्रचलित भाषाओं की स्थिति का चित्रण है, उससे स्पष्ट होता है कि मॉरिशस में विशेष रूप से फ्रेन्च अँग्रेजी भाषा का वर्चस्व है । मॉरिशस के औपनिवेशिक शासकों में सबसे मत्त्वपूर्ण स्थान फ्राँसीसियों का रहा । शासन के साथ–ही, उनकी सभ्यता, संसकृति एवं भाषा की अमिट छाप भी मॉरिशस पर अधिक है। उसके बाद अंग्रजों का आधिपत्य हुआ है और अंग्रजी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ । व्दीप पर चीनी भाषा के भी लोग है, जो अपनी भाषाओं पर प्रेम करते हैं । साथ ही वहाँ हिन्दी तथा उसकी अन्य बोली भोजपुरी भी प्रचलित है। लेकिन वहाँ कुछ ऐसे भी नवयुवक है जो भारतीय होते हुए भी हिन्दी भाषा का प्रयोग न कर अंग्रेजी का इस्तमाल करते हैं । वहाँ क्रियोली बोली बोली जाती है। अतः स्पष्ट है कि मॉरिशस में भाषाओं की विविधता है ।

प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित उपर्युक्त देश, काल और वातावरण को देखते हुए निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उपन्यास में यह तत्व प्रखर रूप में उभरकर नहीं आया हैं । जहाँ आवश्यक है या जहाँ अभिमन्यु अनत को अवसर प्राप्त हुँआ है वही इस तत्व को चित्रित किया गया है । फिर भी उपन्यास में जिस देश, काल और वातावरण का चित्रण है उससे हम मॉरिशस के स्थानीय रंग से उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजकीय और भाषिक परिस्थितियों से परिचित हो जाते हैं ।

## ( 5 ) भाषा एवं शैली :—

### ( 1 ) भाषा : स्वरूप :—

भाव–विचार संप्रेषण के लिए योग्य भाषा की प्रभावूपर्ण प्रयुक्ति आवश्यक होती है। प्रत्येक रचनाकार उपयुक्त भाषा के माध्यम से ही अपने कथानक को प्रभावशाली ढ़ग से संप्रेशित करने की कोशिश करता है । भाषा के सैध्दांतिक पक्ष के संबंध में यह कहना अनुचित न होगा कि सफल भाषा वही होती है जो उपन्यास की कथा ,काल और पात्रों के अनुरूप हो । साथ ही उसमें स्थानीय मुहावरों और लोकोक्तियों का भी यत्र–तन्त्र उपयोग हों ।

'हड़ताल कल होगी' उपन्यास की भाषा: ——

प्रस्तुत उपन्यास मुख्य रूप से खड़ीबोली हिन्दी मे लिखा है । भाषा प्रभावशाली एवं भावों का सशक्त संप्रेषण करने में सक्षंम है। साथ ही उपन्यास के पात्रों के मन में उठनेवाले अन्तर्व्दन्व्दों को भी व्यक्त करती है । कहीं यह भाषा व्यंग्यात्मक रूप भी धारण करती है । भाषा पात्रानुकूल है। जिस परिवेश का पात्र है वहीं की भाषा का प्रयोग किया गया है । जैसे प्रस्तुत उपन्यास का पहाडी इलाके का वह दुबला पतला मजदूर जो उस क्षेत्र का मुखिया है ,वह अमित से कहता है ,,,,,

मुखिया : 'जब काम ना होवे लात सब कोई छछनल रेफिला और जब काम रहेला त देह चुरावल जाला ।"

अमित : 'नहीं चाचा, यह देह चुराने की बात नहीं ।"

मुखिया : 'ए बाबू" ह ड़ताल हम लोगन से ना होई । कुछ होवे हम लोग त काम करब स" ।

अमित : 'अपने हक को इस तरह जाने दोगे ?[1]

अतः स्पष्ट है मुखिया देहाती है इसलिए भाषा भी देहाती है।उपन्यास मे जहाँ पात्र शिक्षित है वहाँ उसकी भाषा स्तरीय है ।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 152 ।

प्रस्तुत उपन्यास में भाषा संबंधी विविधता मिलती है । भाषा में सौदर्य लाने के लिए विविध उपकरणों का प्रयोग भी किया गया हैं। प्रस्तुत उपन्यास में विविध भाषाओं का प्रयोग किया हैं । इस संदर्भ में अभिमन्यु अनत का कहना है "मैंने अपनी किसी भी रचना में अपने को भाषा के प्रति सचेत नहीं दिखाया, ..... । कथा की माँग पर मैंने फ्रेन्च, क्रिओली, उर्दू भोजपुरी, अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों का इस्तमाल किया हैं , , ,।"[1] , , अतः स्पष्ट है की माँग के अनुसार फ्रेन्च , उर्दू,भोजपुरी अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है । वह प्रस्तुत है ।

प्रस्तुत उपन्यास में अरबी भाषा के कई शब्द आये है । जैसे ' सिफारिश '[2], ' तनख्वाह '[3], ' इतमीनान '[4] । अंग्रेजी भाषा के भी कई शब्द आये है । जैसे ' स्टेट कमर्शियल बैन्क '[5], ' सिनिसिजम '[6], ' मैकेनिक '[7], ' इन्श्योरेंस '[8], ' मीटिंग '[9], ' मेमोरंडम '[10], ' सुप्रीम कोर्ट '[11], ' टेबल टेनिस '[12], ' चैंपियन '[13], ' मेडिकल

---

1 डॉ, कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पृष्ठ–94 ।
2 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 55 ।
3 वहीं – पृष्ठ – 124 ।
4 वहीं – पृष्ठ – 165 ।
5 वहीं – पृष्ठ – 14 ।
6 वहीं – पृष्ठ – 15 ।
7 वहीं – पृष्ठ – 30 ।
8 वहीं – पृष्ठ – 30 ।
9 वहीं – पृष्ठ – 30 ।
10 वहीं – पृष्ठ – 30 ।
11 वहीं – पृष्ठ – 31 ।
12 वहीं – पृष्ठ – 31 ।
13 वहीं – पृष्ठ – 31 ।

कॉफ्रेस '[1], 'चेक आफ '[2], 'रेकार्ड '[3], 'इकोनोमिक्स '[4], 'साइक्याद्रिस्ट '[5], 'हाइपरसेंसिटिव '[6] आदि ।

प्रस्तुत उपन्यास, 'हड़ताल कल होगी ' में कुछ फ्रेन्च भाषा के वाक्यांश भी दिखाई देते हैं । क्योंकि मॉरिशस के औपनिवेशिक शासकों में सबसे –महत्वपूर्ण स्थान फ्रांसीसियों को रहा । परिणाम स्वरूप उनकी भाषा की अमिट छाप मॅारिशस पर अधिक दिखाई देती है । अतः प्रस्तुत उपन्यास में आये हुँए कुछ फ्रेन्च वाक्यांश प्रस्तुत हैं ।

जैसे ———

(1) 'जे व्येद्रे ते प्रांद जीज एअर '[7] –– प्रस्तुत फ्रेंच वाक्यांश का सुधारित रूप इस तरह है — (' जा व्हूद्रे त प्रॉ दीज एअर )

(2) 'तो आमूर ए ते आमूर देफांजी ? '[8]

(3) 'मांज तो पे शेरी ' सुधारित रूप (' मांज तो पॅ शेरी ')[9]

(4) 'जे ते देमांद दे गार्दे तो काल्प '[10]

प्रस्तुत उपन्यास में अभिमन्यु अनत की भाषा की एक विशेषता यहाँ नजर आती है कि जहाँ–जहाँ उन्होंने फ्रेंच भाषा के वाक्यांश का प्रयोग किया है, वहाँ तुरन्त बाद उसका हिन्दी

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 44 ।

2 वहीं – पृष्ठ – 54 ।

3 वहीं – पृष्ठ – 70 ।

4 वहीं – पृष्ठ – 70 ।

5 वहीं – पृष्ठ – 73 ।

6 वहीं – पृष्ठ – 74 ।

7 वहीं – पृष्ठ – 51 ।

8 वहीं – पृष्ठ – 70 ।

9 वहीं – पृष्ठ – 72 ।

10 वहीं – पृष्ठ – 160 ।

भाषा मे अनुवाद भी दिया है । इससे पाठकों को फ्रेंच वाक्यों के अर्थ हिन्दी भाषा में समझने में आसानी होती है।

प्रस्तुत उपन्यास, ' हड़ताल कल होगी ' मे कुछ अंग्रेजी कहावतें, हिन्दी की कहावतें, हिन्दी मुहावरें आदि का भी प्रयोग किया हैं । जैसे — अंग्रेजी कहावत में प्रस्तुत कहावत उल्लेखनीय है । ' सीकेटिव एक्टीविटी केन नोट बी दि एविडस ऑफ सिंसेरिटि ।'[1]

हिन्दी मुंहावरे के अंतर्गत ' घर की मुर्गी साग बराबर '[2], ' घर का आटा गीला करना '[3] ' अपना सानी न होना '[4], आदि का तो हिन्दी कहावतें के अंतर्गत ' धी जब सीधी अंगुली से नहीं निकलता तो अंगुली टेढ़ी करनी चाहिए '[5] आदि का प्रयोग किया गया है ।

( 2 ) शैली :-

( 1 ) शैली का स्वरूप -

विश्व साहित्य में शैली की महत्ता की एक अखण्ड प्राचीन परम्परा है। संस्कृत विद्वानों ने शैली को ' रीति ' कहा है । आचार्य वामन ने, ' काव्यांलंकार सुत्र 'में रीति का विश्लेषण करते हुए उसे, ' विशिष्ट पद रचना ' कहा है। आधुनिक काल में इसे अंग्रेजी 'स्टाइल' का पर्याय माना जाता है। प्रत्येक साहित्यकार प्रयत्नशील रहता है कि उसकी लेखन शैली में नवीनता और मौलिकता हो ।

( 2 ) ' हड़ताल कल होगी ' उपन्यास की शैली ——

प्रस्तुत उपन्यास मुख्य रूप से वर्णनात्मक शैली मे लिखा गया है । किन्तु इस उपन्यास के अन्तर्गत विविध शैलियों का प्रयोग भी किया गया हैं । जैसे उपन्यास के बीच–बीच में पूर्वदीप्ति शैली, विश्लेषणात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, आदि शैलियों का

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 70 ।
2 वहीं – पृष्ठ – 15 ।
3 वहीं – पृष्ठ – 15 ।
4 वहीं – पृष्ठ – 141 ।
5 वहीं – पृष्ठ – 153 ।

प्रयोग किया गया है । डॉ. कमलकिशोर गोयनका प्रस्तुत उपन्यास को ' आत्मकथात्मक उपन्यास ' कहते हैं । अतः स्पष्ट है प्रस्तुत उपन्यास मिश्र शैली मे लिखा गया है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त शैलियों के उदाहरण प्रस्तुत है ।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित है। वह अपने कमरे में जख्मी हालत में पड़ा है। अतः उसे अपने जीवन से संबंधित अनेक घटनाएँ याद आती है । जैसे उसे ओलिव्या बस्ती में घटित घटना याद आती है , "ओलिव्या की उस बस्ती का वह धुआंधार वातावरण , , , , , कोलाहल , „ , , , आग की लपटे , , , , चीत्कार और , , , , । , , , । . . . । आग की लपटों में कई झोपड़ियाँ ध्वस्त हो रही थी" , „ , , उन लपटों के बीच से उसने तीन गायों की रस्सियाँ काटी थीं , , , दो मेमनों को बाहर किया था , , , एक सात वर्षीय लड़की की जान बचाई थी „ , खुद आग की लपटों में आते बचा था और फिर वह अंधेरा ।"[1] अतः स्पष्ट है यहाँ पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित जब मॉरिशस समाज में स्थित सामाजिक विषमता , वर्ण–भेद की समस्या और उससे त्रस्त अपने मित्र किशोर को देखता है तो वह बेचैनसा हो जाता है , वह स्वयं से ही बातें करने लगता है। जैसे,....." किशोर अगर गोरा होता तो क्या उसकी कला इस तरह अर्थ–हीन रह जाती ? इसमें दोष किसका था ? जन्म के संयोग का या सामाजिक मनोवृत्ति का ? ।"[2]

अन्य उदाहरण मे जानीन का एकालाप भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे ..." अमित का यह कहना क्या सही नहीं कि मजदुरों को मात्र उनके अधिकारो से वंचित नहीं रखा जाता बल्कि , उन्हें भीतर से मार डाला जाता है ? उनके हृदय और उनकी आत्मा की हत्या कर दी जाती है ?"[3] अतः स्पष्ट है यहाँ विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत उपन्यास मे जहाँ–जहाँ फ्रान्सीसी पूँजीपतियों पर व्यंग्य किये हैं , वहाँ व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है । जैसे अभिमन्यु अनत जानीन के घर चल रही दावत का

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 8 , 9 ।
2 वही – पृष्ठ – 16
3 वही – पृष्ठ – 125 ।

वर्णन करते हुए व्यंग्य रूप में कहते है, " मेहमानों की देखभाल और परोसने के लिए लाफलोर से सात आदमी आए हुए थे। सफेद लिबास में यें ही सात व्यक्ति थे जो लोगों के रंग से भिन्न रंग के थे । , , , , इसीलिए तो वे जशन में शरीक न होकर सेवा में लगे हुए थे। गोरा रंग सेवा लेने के लिए होता है, काला रंग सेवा करने के लिए अच्छा कानून था यह !"[1]

अन्य उदाहरण में जानीन अपनी और अपने घर के नौकरों की आर्थिक स्थिति में स्थित अंतर को देखते हुए व्यंग्य रूप में कहती है, " एक आदमी का घर दस बीघा जमीन घेरे हुए था और दूसरे आदमी को पांव रखने की जगह नहीं थी ।"[2]

प्रस्तुत उपन्यास में पत्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया है । जैसे जब किशोर अपने मित्र अमित को पत्र के माध्यम से आशा के प्रति अपनी भावना को बताने जाता है[3], दूसरी ओर जानीन अमित को अपने प्रेम के बारे में खत लिखती है ।[4]

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' की भाषा विषय तथा कथा के अनुरूप हैं। अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग पात्र और परिस्थिति के अनुकूल किया गया हैं । विषय के अनुरूप विविध शैलियों का प्रयोग कर शिल्प सौन्दर्य को अधिक आकर्षक बनाया गया है। कुल मिलाकर अभिमन्यु अनत की भाषा में अपनी कथा को सार्थक एवं प्रभावी रूप से संप्रेषित करने का सामर्थ्य है।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 130–131 ।

2 वहीं – पृष्ठ – 126 ।

3 वहीं – पृष्ठ – 137–138 ।

4 वहीं – पृष्ठ – 150–151 ।

## (6) उद्देश्य :–––––

प्रस्तुत उपन्यास का एक मात्र उद्देश्य व्दीप पर स्थित ईख मजदुरों को उनके हक अधिकार दिलाना एवं वर्ण–भेद की समस्या का चित्रण करना है । अभिमन्यु अनत का यहाँ यह भी उद्देश्य रहा है कि पाठक इन सभी समस्याओं पर सोचे एवं प्रतिक्रिया स्वरूप विद्रोह करें, क्रियाशील बने । अभिमन्युअनत अपनी प्रस्तुत रचना व्दारा पाठकों का एक बेचैनी देना चाहते हैं । वे अपने व्दारा उठाये गये प्रश्नों, मुद्दों, समस्याओं, विचारों, अनुभूतियों को पाठक के मानस पटल पर अंकित करना चाहते हैं। उपन्यासकार का उद्देश्य अपनी रचना द्वारा 'संघर्ष की प्रकिया' को सदा के लिए जारी रखना है । अभिमन्यु अनत का कहना है, "मेरे लिए एक रचना की सार्थकता प्रश्नों के उत्तर में नहीं होती बल्कि प्रश्न पैदा करने में होती है । मैंने प्रश्न पैदा किया है । प्रतिफल की चिंता से कहीं अधिक चिंता मुझे आदमी की बेबसी और उसकी उनीदी हालत से होती है ।. . . मेरी रचना उसे झकझोरकर उस विस्मृत स्थिति, परिस्थिति के प्रति आगाह कर दे और वह पूछ बैठे कि आखिर यह अधिकार कब तक नहीं मिलेगा तो बस मुझे प्रतिफल की चिंता नहीं, उसकी प्राप्ति के लिए की जाने वाली प्रक्रिया की चिंता रहती है ।"[1]

प्रस्तुत उपन्यास" हड़ताल कल होगी " में अभिमन्यु अनत मॉरिशस समाज की अन्य छोटी–बड़ी समस्याओं को भी समाज के सामने रखना चाहते हैं। जैसे मॉरिशस की आजादी के बाद भी आजादी के मूल्यों का हनन, बढ़ता राजनीतिक छलावा, भ्रष्टाचार, बेकारी, सामाजिक विषमता, असंगति आदि । उपन्यासकार मॉरिशस समाज की बांझ व्यवस्था में सुधार लाना चाहते है । इसके लिए वे मजदुरों को उद्योग में हिस्सेदार बनाना चाहते हैं । ताकि मॉरिशस में स्थित आर्थिक विषमता का खातमा हो एवं मजदुरों को उनके हक प्राप्त हो । उन्हें जीवन विकास के लिए समान अवसर प्राप्त हो, उनका भविष्य उज्ज्वल हो ।

अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से मॉरिशस समाज को आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता ( वर्ण भेद की समस्या) से मुक्त कर आम आदमी के हक की रक्षा करना चाहते हैं । अतः उपन्यास प्रगतिशील है ।

1 डॉ, कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पृष्ठ – 94 ।

## ( 7 ) शीर्षक की सार्थकता : ----

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक' हड़ताल कल होगी' संक्षित एवं अर्थपूर्ण है । वह कथानक से संबंधित है। वह अभिमन्यु अनत के आशावाद को स्पष्ट करता है। उपन्यासकार प्रस्तुत शीर्षक के माध्यम से इतना ही कहना चाहते है कि, प्रस्तुत उपन्यास में दिखाया हुआ जो संघर्ष आज सफल न हो सका,वह कल जरूर सफल बनेगा । अतः वे संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखने में ही विश्वास रखते है ।

प्रस्तुत शीर्षक' हड़ताल कल होगी ' से यही स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत उपन्यास का नायक अमित अपने जीवन में अपने दोहरे संघर्ष को पूरी शक्ति के साथ लड़ता है । वह एक ओर मजदूर नेता बन मजदुरों के हक की लडाई लड़ता है, तो दूसरी ओर गोरी फ्रॉन्सीसी लड़की जानीन से ब्याह कर मॉरिशस समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाने के लिए लड़ता है। किन्तु मॉरिशस समाज में व्याप्त फ्रान्सीसी पूँजीपतियों के कारण उसका संघर्ष सफल नहीं होता।

लेकिन अमित मायूस न होते हुए अपने संघर्ष को पूरे जोश के साथ जारी रखता है। क्योंकि उसे पूरा विश्वास है कि भले ही आज उसका संघर्ष सफल न हुआ हो ,किन्तु कल वह दिन जरूर आएगा जब उसके द्वारा किए मजदुरों के लिए संघर्ष के द्वारा मजदुरों को उनके हक प्राप्त होगे, पूँजीपतियों द्वारा निर्मित आर्थिक विषमता का खातमा होगा और तभी उसका संघर्ष सफल होगा ।

प्रस्तुत उपन्यास में अभिमन्यु अनत का कहना है कि जीवन यह संघर्ष की श्रृखला है । लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सभी लड़ाईयाँ आज ही लड़ी जाये । आज अगर मजदुरों का संघर्ष जोरों पर है तो कल वर्ण–भेद की लड़ाई भी जरूर जोर पकड़ेगी । प्रस्तुत उपन्यास में अमित जानीन का आज ब्याह नहीं हो सका किन्तु उनका संघर्ष आज भी जारी है और कल भी रहेगा । मॉरिशस समाज में अमित–जानीन कल भी थे और आज भी है। अतः इन प्रेमियों का संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक वर्ण–भेद जैसी अमानवीयता का खातमा नहीं हो जाता है ।

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन से यही स्पष्ट होता है कि अभिमन्यु अनत मन मे आशा लिए हुए संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखना चाहते हैं। ताकि आने वाला कल सुख–समृद्धि

लाये । अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास का ' हड़ताल कल होगी ' शीर्षक सार्थक है ।

## निष्कर्ष :—

अभिमन्यु अनत का ' हड़ताल कल होगी ' संघर्षशील उपन्यास है। इसमें अभिमन्यु अनत ने अपने कथानक के माध्यम से मॉरिशस समाज में होनेवाले वर्ग,वर्ण–भेद को प्रतिबिंबित किया है । मॉरिशस का देश ,काल और वातावरण इस उपन्यास का प्राणतत्व है । वह कथा की पृष्ठभूमि न होकर उसका प्राणतत्व बनता है । आनिवासी भारतियों के दुःख दर्द का प्रकटीकरण 'हड़ताल कल होगी ' रचना का लक्ष्य है । जिसे उपन्यासकार ने बड़ी गंभीरता से चित्रित किया है ।' हड़ताल कल होगी ' का कथानक मौलिक और सत्य पर आधारित है। वह समाज परिवर्तन की माँग को दोहराता हैं । प्रस्तुत उपन्यास के पात्र केन्द्र ओर परिधि दोनों ओर परिक्रमा करते हैं। संघर्षशील और नवविचारों के पात्र केन्द्रीय हैं ,परिधि पर पारम्पारिक । 'हड़ताल कल होगी'का लक्ष्य केन्द्रीय पात्रों की न्याय की माँग है । ' हड़ताल कल होगी'का नायक अमित है,तो नायिका जनीन । गौण पात्र जैसे किशोर ,मिशेल ,सत्येन्द्र अमित के पिता , जानीन के पिता , अमित की माँ ,जानीन की माँ ,दादी आदि कथा पटल की व्यापकता को चित्रित करते हैं । कथोपकथन से यह पात्र न केवल सजीव बनते है बल्कि अपने स्तर और स्थान को भी स्पष्ट करते है । कथानक के संवाद छोट–बड़े दोनों तरह के है । वे उद्देश्यपूर्ण है । वे कथा के साथ साथ पात्रों के विकास में भी योगदान देते हैं । भाषा–शैली की दृष्टि से देखा जाए तो प्रस्तुत उपन्यास में अभिमन्यु अनत मॉरिशस की मिश्र संस्कृति को चित्रित करने के लिए साधन के रूप में भाषा का प्रयोग करते नजर आते हैं । प्रस्तुत उपन्यास में आयी हुई हिन्दी ,अरबी ,अंग्रेजी ,उर्दु ,फ्रेन्च शब्दों की भरमार मॉरिशस की मिश्र संस्कृति की परिचायक है । भाषा का यह रूप ' हड़ताल कल होगी ' को मॉरिशस का साहित्य सिद्ध करने में अपने–आपमें समर्थ सिद्ध करता है। फिर उसे उसके लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यता नहीं रहती ।' हड़ताल कल होगी ' का उद्देश्य वर्ग, वर्ण के आधार पर होनेवाले अत्याचार को मिटाकर उसकी जगह समानता, बन्धुता लाने की हिमायत करना हैं ।'हड़ताल कल होगी' शीर्षक आस्था जगानेवाला ,उम्मींद बढ़ाने वाला हैं । वह समाज की व्दन्व्दात्मक स्थिति को भी

स्पष्ट करता है। कुल मिलाकर 'हड़ताल कल होगी ' उपन्यास शिल्प ,शैली ,विचार सभी दृष्टि से एक प्रौढ़ रचना बनकर सामने आता है ।